Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 1, Issue 1 - 2016

शैव–काव्य परम्परा में श्री शिव चरित मानसः एक अध्ययन

डॉ0 प्रीति*

संस्कृत साहित्य की विशाल परम्परा में वैदिक शतरुद्रि, उत्पलदेव की 'स्तोत्रावली', जगद्धर भट्ट की स्तुतिकुसुमांजलि, पुष्पदेव दंत की 'शिव महिम्न स्तोत्र,' रावण रचित 'शिव ताण्डव स्तोत्र, शंकराचार्य रचित शिवानन्द लहरी, कालिदास कृत 'कुमारसंभव', भारवि कृत 'किरातार्जुनीयम्' आदि ग्रन्थ उल्लेखनीय स्थान रखते हैं।

हिन्दी साहित्य के आदिकाल में अपभ्रंश व जन–भाषा दोनों में ही शिवकाव्य के प्रचुर ग्रन्थ प्राप्त होते हैं, जिनमें पुष्पदंत के 'णयकुमार चरिउ' में शिवकथा का वर्णन उल्लेखनीय है। 'प्राकृत पैंगलम' में भी शिव के विराट् स्वरूप का वर्णन है।

आगेचलकर सिद्धों ने शैव मत से प्रभावित होकर शिव लीला के पदों की रचना की। 'नाथपंथ' शैव गत का ही पंथ था। गोरखनाथ तथा अन्य नाथ योगियों की बानियों में 'हठयोग वर्णन' प्रसंग में सहस्रार कमल में सदाशिव के दर्शन का वर्णन मिलता है।

मैथिल कोकिल विद्यापति के पदों में शैव साधना के अनेक गीतों का सृजन हुआ है। सूफी कवि मलिक मोहम्मद जायसी के पद्मावत् में शैवमत का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। कबीर दास जी भी हठयोग का वर्णन करते हुए 'नाथ संप्रदाय' से प्रभावित दिखायी देते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी के ग्रंथो में अवधी भाषा में वैष्णव एवं शैवमत के समन्वय का विराट् स्वरूप निदर्शित होता है।

रीतिकालीन कवियों में केशवदास, देव, पद्माकर, भिखारीदास और भूषण के काव्य में शिव–कथा का वर्णन स्थान–स्थान पर प्राप्त होता है।

आधुनिक काल में कविवर जयशंकर प्रसाद जी की कृति 'कामायनी' पर शैव–सम्प्रदाय के प्रतिभिज्ञा दर्शन का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' कृत 'तारकवध' शैवकाव्य परम्परा का विशाल ग्रन्थ है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक कवियों ने अपने काव्य में आदिदेव शिव की भक्ति–भाव से पूर्ण होकर सरस काव्य का प्रणयन किया है।

शिव–भक्ति के क्रम में अवधी भाषा में प्रणीत दोहा–चौपाई छंदों के शिल्प विधान में 'श्री शिवचरितमानस', प्रबन्ध काव्य सम्भवतः सीतापुर जनपद का दूसरा शिव काव्य है। इसके पूर्व जनपद सीतापुर (उत्तर प्रदेश) से अवधी भाषा की प्रथम कृति 'शिव–चरितामृत' सन 1824 ई. के सन्निकट प्रणीत हुई। इसके रचनाकार ठाकुर गणेश सिंह गनपाल रियासत रामपुर मथुरा (सीतापुर) के रियासतदार थे। शिव चरितामृत का प्रकाशन सन् 1893 ई. में भारत जीवन प्रेस काशी से हुआ था।

*हिन्दी विभाग, हिन्दू कन्या महाविद्यालय, सीतापुर–261001 (उ0प्र0)
E-mail Id: dr.priti_hkm@yahoo.com

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

उक्त ग्रन्थ में सूत–शौनकादि ऋषियों द्वारा कथित भगवान शंकर के विविध चरित्रों का सत्ताईस बिन्दुओं में विस्तार है। काव्य ग्रन्थ रीतिकालीन काव्य परम्परा से प्रभावित है। इसके सापेक्ष प्रस्तुत अध्ययन का आधार ग्रंथ डॉ0 रमेश मंगल बाजपेयी विरचित श्री 'शिवचरित मानस' विशुद्ध भक्तिभाव से भावित और सम्यक संयोजित शिवकथा का पाँच पर्वों में विस्तार है।

सैंधव–सभ्यता के उपलब्ध असंख्य देवियों और शिव की मूर्तियों से अविकल साम्य रखने वाले देवी–देवताओं में–उषस्, पूषन, वाक्, पृथ्वी आदि देवियों तथा रुद्र, पुरुष, हिरण्यगर्भ आदि देवता शिव के ही रूप हैं। अतः शैव धर्म या शाक्त धर्म के आदि कालीन प्राधान्य को नकारा नहीं जा सकता। यहीं से साम्ब सदाशिव की लिंग रूप में स्थिति की स्वीकृति का प्रसार हुआ है। शिव–पुराण और अन्य शिव विषयक ग्रन्थों में भी आदि देव के रूप में शिव की ही प्रतिष्ठा है। उनका प्राकट्य आदि लिंग के रूप में सकारण है। वेदान्त के अनुसार निर्गुण परमेश शिव ने पुरुष (नारायण) और प्रकृति (नारायणी) की उत्पत्ति की। उस निर्गुण शिव से, त्रिदेवों का अवतरण हुआ है। सकल सृष्टि और प्रलय, शिव के ताण्डव और परमेश्वरी के लास्य भाव से सम्पन्न होता है। 'श्री शिव चरित मानस' साम्ब सदाशिव के निर्गुण और सगुण चरितों के संगुम्फित अंशांश की क्रम बद्ध लीलाकथा, पंचायन शिव (पंचाक्षर मन्त्र) का आभास देते पंच पर्वों में ग्रथित है। आदि लिंग का प्राकट्य, त्रिदेवों की उत्पत्ति महेश्वर सती का अवतरण द्वादस ज्योतिर्लिंगों के प्राकट्य की कथा महेश्वर सती जी का लौकिक परिणय, सती का छद्म मोह और देह त्याग, पार्वती के रूप में सती का पुनर्जन्म, तपस्या और शिव का वरण, कुमार कार्तिकेय, श्री गणेश का अति संक्षिप्त चरित, रुद्र रूप में शिव जी के बहुप्रचलित कुछ प्रसंग सहित उत्तर पर्व में श्री शिव पंचायत और श्री शिव दरबार का वर्णन है। अनन्तर राम चरित मानस की भाँति ज्ञान–भक्ति–कर्म–मोक्ष आदि आध्यात्मिक विषयों पर प्रकाश डाला गया है। यह समस्त वर्णन शिव पुराण की मूल कथा के अतिरिक्त वेदान्त, गीता, मनुस्मृति और न्याय ग्रन्थों से भी ग्रहण किया गया है। इस संग्रहण में लोक–मंगल और लोक रंजन का ही भाव है।

ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को अनन्त शिव–लीलाओं से अंशाशः संग्रहित कर और उसे आप्त ग्रन्थों व आध्यात्मिक सन्दर्भों के सारभूत सूत्रों के ताने बाने में स्थिर कर सज्जित किया गया है। निर्गुण ब्रह्म जो अजन्मा है, चतुर्गुणी अर्थात् जो चारों कालों में उपस्थित है, उसकी चर्चा का प्रारम्भ कहाँ से हो? यह कठिन प्रश्न है। पुनरपि, वह निर्गुण ब्रह्म सर्वप्रथम नाद ब्रह्म (शिव) से जाना गया। जो सर्वव्यापी प्रणव (ओमकार) से व्यक्त है। प्रणव ही सबका कारण और निर्गुण परमेश्वर है।

"प्रनौ सर्व व्यापक सिवा रूपा। सर्वप्रथमु सोइ रहई अनूपा ।।
सिव अरु प्रनौ सदाहिं अभेदा। वाचक वाच्यहिं कोनहि भेदा।।
सबु इक कारण प्रनौ सदाई। निरगुन परमेश्वर कहलाई।।

––श्री शिव चरित मानस, उत्तर पर्व

प्रणव (अउम) का अकार बिरंचि (ब्रह्मा), उकार, विष्णु तथा मकार रुद्र कहा गया। साथ ही बिन्दु (नाद) को महेश्वर भाव से

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

जाना गया। वेदान्त के अनुसार– ''निर्गुण परमात्मा (ब्रह्म शिव) ने पुरुष और प्रकृति को एक साथ उत्पन्न किया। जिन्होंने शिवप्रिय काशी स्थित सुधा (ब्रह्म) रूप जल में घोर तप किया वह सुधा रूप जल अखिल विश्व में व्याप्त हुआ। सदाशिव ने वामपार्श्व से श्री विष्णु को प्रकट किया। वे विष्णु (पुरुष) समस्त प्रकृति (माया) को लेकर उस अमृतार्णव में सोये। उस जल में सोने के कारण श्री विष्णु को नारायण और उस प्रकृति को नारायणी कहा गया। अनन्तर वेदपति सम्भु के दक्षिण पार्श्व से ब्रह्माजी की उत्पत्ति हुई, जो श्री नारायण के नाभि कमल में प्रकट हुए। उन्होंने अपने तप बल से भगवान विष्णु को देखा। फिर अपने प्रभुत्व को लेकर दोनों में तीव्र–विवाद व महासंग्राम होने लगा। जिसके चलते सदा शिव को पर्याप्त क्षोभ हुआ। वे विवाद को शान्त कराने हेतु अगम्य और महाज्वाल सदृश लिंग रूप में प्रकट हुए। कालान्तर में सदाशिव ने स्वयं को ब्रह्मा जी की भृकुटि के मध्य से रुद्र रूप में प्रकट किया। लोक में उनका यह रुद्र रूप, महेश रूप से विख्यात हुआ। इस प्रकार ब्रह्मा–विष्णु–महेश को त्रिदेव कहा गया। यथा –

''निरगुन परमातमु सिव जायेउ। प्रथमहिं अस वेदान्तनु गायेउ।।
ब्रह्म सिवहिं ते पुरुष औ प्रकती। पुरुष प्रकति सह भै उतपत्ती।।
प्रकति पुरुष मूलस्थहिं वारी। कीन्हेउ तपु दूनौं संग भारी।।
जहँ मूलस्थ वारि सो कासी। सो अतिप्रिय प्रभुसिव अविनासी।।
सो जलु सकल बिस्सु महँ छावा। बाम पार्श्व सिउ हरि उपजावा।।
हरि भे सुप्त प्रकृति लइ माया। जल महुँ नाउ नरायनु पाया।।
बिस्नू नारायन कहलाई। प्रकति नरायनि नाऊँ धराई।।
दच्छिन पार्श्व संभु उपजावा। ब्रह्मकमल नाभि–हरि आवा।।
तपु बल ब्रह्मा देखे, प्रभु बिस्नू भगवान।
पुनि गुरु लघु कै प्रश्नइ, समर बिबादु महान।।

दोहा–12, उत्तर पर्व

हरि बिंरचि के चलत विवाद। सदाशिवहि उर भयेउ विषादा।।
करै बिबादु सान्तसिव लीन्हा। लिंग रूप निज प्रगटित कीन्हा।।
पुनि सिव निज–उर कौतुक ठाने। ब्रह्मा–भृकुटि रुद्र प्रगटाने।।
रुद्र महेस – रूप सिउ जाने। बिधि हरि रुद्र त्रिदेउ बखाने।।''

–श्री शिवचरित मानस

ग्रन्थ के मूल प्रतिपाद्य का प्रारम्भ यहीं से होता है। आदि लिंग के प्राकट्य की प्रायः यही कथा, शिव पुराण के अन्तर्गत विद्देश्वर संहिता में भी आयी है। जिसे ब्रह्मा जी ने नारद से कही है और जिसका प्रारम्भ वे महाप्रलय के पश्चात् की स्थिति से करते हैं। ब्रह्मा जी का कथन है कि महाप्रलय होने पर जब सृष्टि का विनाश हो जाता है, तो केवल अविनासी–शिव–तत्त्व ही रहता है। इस शिव तत्त्व से शक्ति (प्रकृति) का प्राकट्य है। यही आदिशक्ति भवानी अम्बिका ही लोक में जगन्माता के रूप में विख्यात है। वही त्रिदेवों की माता, नित्य और मूलकारण है। वे अष्ट–भुजाधारी माता सर्वसम्मत है। सदाशिव की प्रेरणा से यही आदि शक्ति सभी लोकों की सृष्टि करती है।

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

कालान्तर, आदि पुरुष (शिव) ने निर्माण की इच्छा से (काशी में) सुधारूप जल को उत्पन्न किया। जिसमें एक तेजपुंज काया प्रकट हुई। उसने सदाशिव के चरणों में प्रणाम कर अपना नाम और कार्य पूछा। इस पर सदाशिव ने गम्भीर वाणी में कहा– ''सर्वव्यापक होने से आप विष्णु हैं तथा कार्य सिद्ध हेतु आप तप करें। ऐसा कहकर सदाशिव ने उन्हें ध्यान मार्ग से मंत्र दिया। जिसे प्राप्त कर विष्णु ने चिरकाल तक घोर तपस्या की। शिव माया से, विष्णु तप से–श्रम से उस ब्रह्मा (सुधा) रूप जल का विस्तार हुआ। तप से श्रमित विष्णु उस जल में सो गया। इस हेतु से उन्हें ''नारायण'' नाम प्राप्त हुआ। श्री विष्णु से महत् सहित चौबीस तत्त्वों की उत्पत्ति हुई। जिसे लेकर ही वे उस जल में निद्रा को प्राप्त हुए। शिवेच्छा से निद्रित नारायण की नाभि से अत्यन्त विशाल कमल प्रकट हुआ। साम्ब सदाशिव की प्रेरणा से उनके दक्षिण पार्श्व से ब्रह्मा जी का प्रादुर्भाव हुआ। जिन्हें (ब्रह्मा जी को) परम कौतकी शिव ने विष्णु जी की नाभि–स्थिति कमल में रख दिया। पुनः अपने अभ्यन्तर (आदि प्रकृति) से प्रेरित सदाशिव ब्रह्म की भृकुटि से रुद्र रूप में प्रकट हुए। शिव–विषयक प्रायः सभी ग्रन्थों में प्रभुत्व को लेकर विष्णु और ब्रह्मा का विवाद होना तथा उस विवाद को शान्त कराने हेतु आदि महालिंग के प्राकट्य की कथा वर्णित है। एतत् 'श्री शिव चरित मानस काव्य' में पावन शिव चरित्रों का प्रारम्भ आदि महालिंग के प्राकट्य प्रसंग से हुआ है। अनन्तर नैमिष तीर्थ में शौनक जी की विनय पर महर्षि सूत जी उन्हें द्वादस ज्योतिर्लिंगों की कथा सुनाते हैं –

''सौनक बोलेसूत रिसि, हे महर्षि सिरमौर।
चाहउँ सिवप्रद ज्ञान मैं, कहहु बिनय पुनिऔर।।

दोहा–29 क

गाथा द्वादस लिंग सुचि, राम चरित अवतार।
हे गुरु बरनौं करि कृपा, स्तुति बारम्बार।।

दोहा–29 ख

सूत महर्षि कहेउ हरिसाई। धन्य–धन्य सौनक मुनि राई।।
पर उपकार सदा मन माहीं। सन्त परम–लच्छन जग माहीं।।
सुनहु कथा मुनि द्वादस लिंगा। संभु भगति तव दीप–पतिंगा।।

– श्री शिवचरित मानस।

निर्गुण ब्रह्म (शिव) का 'एकोऽहं बहुस्यामः' का भाव, अद्वैत से द्वैत के प्राकट्य की घटना है। सृष्टि का क्रम भी यहीं से है। अद्वैत शिव अक्षर ब्रह्म अगोचर, नित्य, अनन्त, निर्गुण, अलिंग, (चिह्नरहित) है। वहीं द्वैताभास में शक्ति या प्रकृति प्राधान्य लिंग रूप में प्रकट है। इसी सगुण हुए लिंग से ही सृष्टि की उत्पत्ति होती है और वे सृष्टि लिंगमय होकर लिंग में ही क्रमशः लय हो जाती है। इस प्रकार केवल शिव ही निर्गुण और सगुण रूप में प्राप्त है। इसी हेतु से वह प्रभुता मुक्त है। ''श्री शिव चरित मानस'' के आदि पर्व में कहा गया है –

अच्छर ब्रह्म अगोचर नटवर। अति दयालु सुखकर मनहर।।
नित्य अनन्त सदा सुखरासी। निरगुन सगुन अमल अबिनासी।।
+++

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

सिव अरु सकती परम सिव, परम तत्त्व दुइ रूप।
सिव कूटस्थ तत्व अरु, सकति ताहि फल रूप।।

दोहा–14, आदि पर्व

रहइँ महेसुर सदा अलिंगा, प्रकृति प्रधान कहावत लिंगा।
उतपति स्रिष्टि लिंग ते होई। रहि लिंगमय लिंगलय सोई।।

– श्री शिवचरित मानस।

पुनरपि, शिव का अर्द्धनारीश्वर स्वरूप द्वैत की अद्वैत अवस्था है। शिव की सगुणता उसकी आदि शक्ति के कारण है। जो शिव के वश में और उसके हृदय में निरन्तर व्याप्त है। यथा–

''सिवा सक्ति सिव कइ अस जानौं। सिवा बिना सिव सव सम मानौं।।
प्रकति सिवा अति सुन्दर दुस्तर। व्याप्त सकल सिव के अभिअन्तर।।
आदि पुरुष सिव ब्रह्म अनन्ता। प्रकति सिवा सिव बस भगवन्ता।।
प्रकति नारि तनु धारई, होय पुरुष संजुक्त। अर्द्ध नरीसुर रूप सोइ, सिवा सम्भु से जुक्त।।

दोहा–17–क, आदि पर्व

एतत् लिंग के प्राकट्य के साथ रुद्र का अवतरण सती के सहित होने से ग्रन्थ में रुद्र सती के पावन चरित्र कहे गये हैं। उनका उक्त चरित्र वर्णन के विस्तार में अनेक अन्तर्प्रसंग और कथाएं हैं। ऋषि मार्कण्डेय की कथा, देवर्षि नारद का मोह, तथा दच्छ–अभिमान के प्रसंग तो शिवपुराण से ग्रहीत ही हैं, पुराणेतर रुद्र (महेश) द्वारा सती को निज मानस सृजित श्री रामकथा की सूचना देना विशेष उल्लेखनीय है। जिसे कवि ने विभिन्न स्तोत्रों के तत्सम्बन्धी सूत्रों को जोड़ कर तथा उस पर केन्द्रित मौलिक चिन्तन के पश्चात् निर्मित किया है। यथा–

''औरउ गूढ़ रहस्य इक, अमर राम–ततु जोय।
परमात्मा साखी रमै, मम मानस नित सोय।।

दोहा–136–ख, आदि पर्व

रम्य राम के रचेउ कहानी। निज मानस सोइ सुनौ भवानी।।
दुःख भंजन रंजन हितकारी। अवनि धेनु मुनि जगु सुखकारी।।
निज भूमिका रहउ नित गाथा। सेवक सखा राम के नाथा।।
सून्य समाधि बिचारेउँ लीला। प्रगटी राम कथा मुद सीला।।
मानस मुखर राम चरिताई। आत्म–गंग सुचि मनहिं लुभाई।।

– श्री शिवचरित मानस।

सती का देह त्याग–अकाल घटना है। अकाल निधन का पुनर्जन्म होता है। साथ ही आसुरी वृत्तियों (तारक असुर) के विनाश हेतु शक्ति की विद्यमानता आवश्यक थी। अतः सती (उमा) का पुनर्जन्म पार्वती (शैलजा) के रूप में होता है। शास्त्रोक्त है कि 'अन्तेमतिः संगतिः।' अर्थात् अन्तकाल में जैसी मति होती है,' वैसी ही उसकी गति होती है। इस तथ्य को उद्घाटित करते हुए 'श्री शिव चरित मानस' के 'हिमालय पर्व' में कहा गया है।

''सती त्याग जब निज तन कीन्हा। मन महुँ दृढ़ संकल्पहिं लीन्हा।।
होहुँ सुता मैं हिमचलु गेहा। अस जिय राखि छाड़ि पुनि देहा।।

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

अति पुनीत भावना दुहु कइ। सोइ सती मैना–पुत्री भइ।।''

–श्री शिवचरित मानस।

इस प्रकार द्वितीय पर्व की कथा मुख्य रूप से पार्वती जी की कठोर तपस्या और उसके द्वारा शिव की प्राप्ति पर केन्द्रित है। अनन्तर शिव पुत्र कुमार कार्तिकेय और गणपति गणेश दोनों ही शिव–पार्वती सम्भूत न होकर क्रमशः केवल शिव, केवल माता पार्वती द्वारा उत्पन्न हैं। शिव पुत्र कुमार कार्तिकेय के जन्म विषयक वर्णन में कहा गया है –

''कालान्तर सिउ–बीरजु तेजा। गिरेउ अवनि जनु कालहिं भेजा।।
प्रथमहि पावकु पुनि रिसि नारी। गहेउ तदपि नहिं सके सँभारी।।
पृष्ठ हिमालय तेजु गिराई। असह जानि सोगंग बहाई।।
भागीरथी पाय सिव–तेजा। मचलि कूल सरकंडन्ह भेजा।।
कूल पाइ तेहि गर्भ अनूपा। धारेउ सिसु तेजस्वी रूपा।।

–शिवचरित मानस कुमार पर्व

इस भाँति पार्वती पुत्र गणेश के जन्म विषयक काव्य पंक्तियाँ हैं:–

''सखिन सलाह परम हित मानी। पारबती मन महुँ हुलसानी।।
निज तनु मैल एकत्रित धारी। मह माया सोइ रचेउ विचारी।।
परमोत्तम सुगठित बलसाली। रचेउ पुरुष निरदोष कराली।।
पारबती सुत सदा कहावौ। रच्छा करहु द्वार सुत जावौ।।

–श्री शिवचरित मानस, कुमार पर्व

उक्त ग्रन्थ के चतुर्थ अध्याय 'रुद्र पर्व' में महाकाल रुद्र के प्रमुख युद्धों का वर्णन है। त्रिपुर दहन, जलन्धर वध, शंखचूड़ वध, अंधकासुर वध तथा गजासुर वध के उद्धृत युद्ध प्रसंगों में ओजस्वी काव्य के माध्यम से महाकाल रुद्र के कोप और अनुग्रह के अद्भुत दर्शन होते हैं। इस पर्व की अन्तर्कथाओं में सती वृन्दा, स्वकीरति मुख आदि के प्रसंग कथा को विस्तार देने तथा अपने औचित्य को सिद्ध करने में सफल हैं। दोनों का स्व–धर्म पालन भक्ति की पराकाष्ठा को स्पर्श करता है। विशेषोल्लेख में पुराण सम्मत नास्तिक धर्म का वर्णन तथा कवि के अपने मौलिक चिन्तन से प्रकट 'मृत्युन्जय छन्द' हैं। नास्तिक धर्म का प्रसार त्रिपुर में मायावी पुरुष अहिरन द्वारा किया गया है। श्री विष्णु अहिरन (मुण्डी) को आज्ञा देते हैं–'

''कहेउ बिस्नु पुनि सकल बुझाई। मुंडी त्रिपुर गवन कर जाई।।
मायामय तहँ धर्म प्रसारी। नास्तिक धरमु सकल सुबिचारी।।
नास्तिक धरमु प्रचार कै, करहु त्रिपुर तुम नास।
पुनि लै धरमु मरुस्थलहिं, करु कलिजुग तक वास।।

दोहा–8, रुद्र पर्व

मायावी पुरुष अहिरन त्रिपुर में जाकर त्रिपुरपति को उस नास्तिक धर्म की दीक्षा देते हुए कहते हैं –

''अहिरन बोलेउ त्रिपुरपति, कहउँ धरम सुविचार।
सकल जान परिपूर्न सो, वेदान्तनु कइ सार।।

दोहा–9, रुद्र पर्व

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

हे दैत्येन्द्र कहौ सुमझाई। सकल धरम तव ज्ञानु भुलाई।।
सकल जीउ आतमु सब ईश्वर। ब्रह्म तलकु जीउ सब नस्वर।।
निद्रा मैथुन भय आहारा। सबु महुँ व्यापि रहे संसारा।।
परम धर्म बस एकु अहिंसा। बरजित सदा जीव कै हिंसा।।
आतमु कष्ट दिये अघ जानहु। अभय दान सर्वोत्तम मानहु।।
जसु धन संग्रह जे नर चहहीं। मनि औषधि मन्तर बलु गहहीं।।
द्वादसायतन एहि जग पोसा। सो पावै नरसुख संतोषा।।
सरगु नरकु जानै सबु कोई। सुखु ही सरगु नरकु दुःख होई।।
छूटै तनसो मुकुति अरु, मिथ्या जाति विचार।
सुखु इच्छा ते सबु करम सदा धरम अनुसार।।

दोहा–10, रुद्र पर्व

रुद्र पर्व के मंगलाचरण के ठीक पश्चात् 'मृत्युन्जय छन्द' से काव्य का प्रारम्भ होता है। युद्ध भूमि, मृत्यु का प्रांगण है। मृत्युजन्य छन्द काल रक्षक है। सत्प्रवृत्ति वाले जीव (सुर, मुनि) पशुता त्याग कर इसका वरण करते हैं और त्रितापों से मुक्त हो जाते हैं। एतत् रुद्र पर्व के प्रारम्भ में इस अमोघ मृत्युन्जय छन्द की उपस्थिति समीचीन है। इस छन्द की प्रत्येक पंक्ति का क्रमशः प्रथमाक्षर लघु मृत्युन्जय मंत्र का क्रमागत अक्षर है और इस प्रकार पूर्णमंत्र 'ऊँ जूँ सः मां जीवै पालय सः जूँ ऊँ से मंडित प्रत्येक पंक्ति विशेष अर्थ और प्रभाव रखती है। उक्त छन्द इस प्रकार है –

''ऊँ कार स्वरूपा, करूना रूपा, सिव समरथ महकाला।
जूँ शब्द पुनीता, गंगा–गीता, अभयंकर तत्काला।।
सः जय सिव संकर सबहिं अभयंकर बिस्वेस्वर नन्दीश्वर।
मां सिवा–भवानी, सक्ति बखानी, पालन थिति प्रलयंकर।।
जी वन सिव दायक, सदा सहायक, सोमनाथ सुखकारी।
वै स्वानर लोचन, भवभय मोचन, वैद्यनाथ दुखहारी।।
पा पालन तिथि कर्त्ता, जग संहर्त्ता, सर्वेश्वर कासीस्वर।
ल लचत दृग दरसनु, सुन्दर पावनु, छवि मनहर रामेस्वर।।
यह बिनती मोरी अस्तुति तोरी, करहु कृपा अबिनासी।
सः जय नागेस्वर, त्रयम्बकेस्वर, मल्लिक अर्जुन सुखरासी।।
जूँ जय मृत्युन्जय, हरहु मृत्यु भय, पंचानन कैलासी।
ऊँ कार जो गावै, सिव बरु पावै, मृत्यु अकाल बिनासी।।
द्वादस अच्छर बीज एहि, महमृत्युंजय जानि।
आर्त्तभाउ स्तुति मिलै, अभय देइँ सिव दानि।।

दोहा–1,रुद्र पर्व

ग्रन्थ के पंचम अध्याय या उत्तर पर्व का सकल प्रतिपाद्य–शिव तत्त्व, मोक्ष, परमात्मा–वर्णन, धर्म–कर्म–आत्मा–मन आदि अध्यात्म निरूपण, शिव–शिवा की भाव प्रवण स्तुति, शिव दरबार वर्णन तथा मध्य में प्रसंग, सागर मंथन, गंगावतरण और महर्षि पाणिनी की कथा को लेकर उपस्थित हुआ है। वस्तुतः उक्त पर्व, अन्य सभी पर्वों में वर्णित धर्म,

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

अध्यात्म, शिवोपासना की विधियों एवं नीति उपदेसों आदि का सम्यक सार–संक्षेप है।

शिव कल्याण का प्रतीक है। यही परमतत्त्व है, जिनका विस्तार अखिल सृष्टि में है। इस तथ्य को भली–भाँति सिद्ध करने के क्रम में ''श्री शिव चरित मानस'' का प्रणयन हुआ है। ग्रन्थ के इस पुनीत प्रयोजन को कितनी सफलता मिली है, उसका उल्लेख करते हुए डॉ0 सूर्यप्रसाद शुक्ल जी का कथन है– ''शिव परमतत्त्व है। सम्पूर्ण सृष्टि का उद्भव और अवसान, उसी की लीला का लास्य है। वह संसार के साथ ही सृष्टि और स्थिति की क्रियाओं का कर्त्ता भी है। तत्त्वतः अजन्मा और अविनाशी शिव के साथ ही सृष्टि और स्थिति की क्रियाओं का कर्त्ता भी है। तत्त्वतः अजन्मा और अविनाशी शिव के पावन चरित का गान करना, उसी की कृपा–प्रसाद से संभव हो सकता है। विद्वान् कवि डॉ.रमेश मंगल बाजपेयी की प्रज्ञा में भावरूप से आभासित और मन–दर्पण में प्रतिच्छवित शिव का परम और चरम गुणगान 'श्री शिव चरित मानस' के रूप में उद्भाषित हुआ है, जिसे उन्होंने निज भाषा अवधी में, छन्द–विधान की विविध शैलियों से अलंकृत करके काव्य रस–रसस्विनी के पावन प्रवाह को रसज्ञ भक्तों और जिज्ञासु पाठकों को समर्पित कर दिया है।

भक्ति पूर्ण यह ग्रन्थ शिव चरित मानस का उत्कृष्ट प्रणयन है, जिसमें अनेक कथाओं और उपकथाओं के माध्यम से विषय को विस्तार दिया गया है तथा श्रद्धा और आस्था के आयामों में आरूढ़ होकर पूजा–अर्चना का विधि–विधान भी प्रस्तुत किया गया है। प्रासंगिक देवों और उनसे सम्बन्धित कथाओं में तीर्थस्थलों और उनसे सम्बन्धित देवताओं और ऋषियों के सन्दर्भ भी दिये गये हैं। 'श्री शिव चरित मानस' भक्ति, ज्ञान और कर्म का उत्कृष्ट सृजन संवरण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्री शिव चरित मानस–डॉ0 रमेश मंगल बाजपेयी–प्रथम संस्करण 1996 ई0।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास–डॉ0 नगेन्द्र।
3. श्री रामचरितमानस–गो0 तुलसीदास–गीता प्रेस गोरखपुर।
4. श्री शिवपुराण (कल्याण विशेषांक–विद्धेश्वर संहिता, कैलाश संहिता)–गीता प्रेस गोरखपुर।
5. श्रीमद्भगवद् गीता–गीता प्रेस गोरखपुर।
6. मांडूक्य उपनिषद–सं0 श्री राम शर्मा आचार्य।
7. वेदान्त दर्शन–गीता प्रेस गोरखपुर।

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501